प्र॰ चल उड़ जारे पंछी यह देश हुआ बेगाना.

उ॰ शान्ति। बच्चे जानते हैं कि इस पुरानी बादशाही में 3 नयी राजधानी स्थापना हो रही है। कौन कर रहा है? परलौकिक नालेजफुल P। उस में ही नालेज है स्वता और रचना की। अब अपने को यह हिस्ट्री जाग्राफी नहीं पढ़नी है कि अकबर आया, औरंगजेब आया, हैलसी एण्डर आया। स्कूल में हिस्ट्री जाग्राफी पढ़ी जाती है। रायल मैथमेटिक्स साइंस आदि में दुनिया का समाचार नहीं है, परन्तु हिस्ट्री जाग्राफी में दुनिया का समाचार है। तो बाबा आकर बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी समझाता है। तो बेहद दुनिया में बाबा आकर नयी सृष्टि रच रहा है, और पुराने का विनाश होता है। जो बाबा समझाता है। ब्रह्मा से लेकर सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक आकर राज समझाते हैं कि हम बच्चे आत्माएं कहां कैसे रहते हैं। हर एक आत्मा में कैसे अवस्था पार्ट भरी है। यह दुनिया नहीं जानती। मनुष्य को न नालेजफुल, न आलमाइटी, न अन्तर्यामी कहा जाता। नालेजफुल होता है सीता। जो कुमारी है। अपने न है कुमारी, न है अपनी रचना की नालेज। अल्पकाल है। अगर हम हर एक स्वता हों तो रचना की नालेज भी होती। परन्तु नहीं जानते इस लिये हम इन्कम्पीटेन्ट हैं। वो P सब कुछ जानते हैं, इस लिये उनको आल्मी आलमइयर कहा जाता है। क्योंकि वह सैलान बीज है, चैतन्य बीज में चैतन्य शक्ति निकलता है। तो वह जान सकते हैं और अपना स्वरूपी नालेज देता है।

यह तो सभी जानते कि P नालेजफुल है। अब वह अपना बच्चे पैदा करते और उन्हीं को नालेज देते। वे छोटे भी जान जाते हैं। कोई छोटे से लेकर बड़े तक पढ़ सकते हैं। बस में बच्चे में कुछ गुण अवश्य होना चाहिये। अब छोटे बच्चे चलन में चले जाते, परन्तु आत्म समझने लिये बुद्धि चाहिये। इस लिये लौकिक बच्चों को भी पढ़ाया जाता है। न अकबर पढ़ेगा न छोटे बड़े सब पढ़ते हैं। छोटे बड़े नौकरी कर सकते हैं। धन और बुद्धि की पूरी आवश्यकता होती। आजकल जो उनको भी बुद्धि धंधे व्यवहार में लगी हुई है। इस लिये कन्याएं नौकरी उठाती हैं। अब बाप समझाता कि बच्चा मेरा धंधा सीख वह धंधा करे। परन्तु आज बाबा कहता जैसे एक बाप अपने बच्चे को कहते हैं कि तुम्हें कारोबार होना चाहिये। अगर यह न पढ़ाओगे तो पढ़ कर न पायेंगे। लौकिक नौकरी भी न कर सकेंगे। कोई यह अब निकम्मा नहीं है, विनाश होना है। और न फिर यह परलौकिक नौकरी पा सकेंगे। कहते समझते हैं। तो क्यों न यह अविनाशी नौकरी लेना चाहिये। परन्तु अब आत्म की धारणा हो तब इस कारण को बताये। और अपने बच्चों को समझाये। मन के विकार से बच्चे बाहर चले जाते हैं। तो फिर हंस और बगुले को बुद्धि नहीं रखते। बच्चे न माने तो होगया कुपुत्र। ऐसे कुपुत्र बच्चे को फिर कहना पड़े कि जाओ तुम्हारे यह नौकरी भी नहीं दे सकते हैं तो बाबा के लिये बहुत बड़ी मुश्किल है तब लड़ते कोर्ट में कोर्ट कहर करेंगे। इस में आसुरी कन्याएं कहर करेंगी। कन्या जिये बाप का बाइप्रोडक्ट नहीं उन्हें सेना के सामने आसुरी पढ़ाकर धंधा सिखलायें। इसको तो आकर घर संभालना है। तो बाबा के पास बोझ बच्चे का तो रहता है परन्तु जब कि बाप कुछ समझ जाय तो कुमार्ग पर चलने वाले। फिर विचारियों को विघ्न बहुत पड़ते हैं। नहीं तो उनकी लाईफ है ही इसको करने लिये। बाप द्वारा आ धंधा पढ़ना और पढ़ाना। एक तरफ पढ़ते रहेंगे दूसरे तरफ पढ़ाते रहेंगे।

ऐसा स्कूल कोई नहीं है, जहां पढ़ते जाय और पढ़ते जाय। यही एक स्कूल है जहां शुरू में जब मैं बाबा से प्रवेश किया है तब से लेकर देह निकली है पढ़ना और पढ़ाना। कराची में लेकर बाबा मम्मा और तुम पढ़ते थे, और नये को पढ़ाते थे। अब राजस्थान किच्छ स्थान के हंगामे होने कारण कुछ समय इतने नहीं पढ़ने आये, आबू में भी हल्के पढ़ने नहीं आये, तो फिर आरम्भ में समझो लेक्चरार पढ़ा। परन्तु जो कुछ हम पढ़ते हैं वह हम पढ़ाते रहते हैं। जहां तो इम्तहान पास कर मार्क्स विकेट हो फिर पढ़ाते हैं। परन्तु हमको दस सर्विस करने बाद आहे मेरी कलों सर्टिफिकेट मिल जाता है। यहां तलवार की बात नहीं, परन्तु जो पढ़ नहीं सकते, उनको खड़ा लगाना, रेती पकड़ना है। कम मार्क्स करेंगे तो कम दर्जा पद पावेंगे। वैसे भी तो जाकर शूद्र देव दासी बनेंगे। देव दासियों में भी नम्बर वार होते हैं। न पढ़ेंगे तो कम पद पावेंगे। जो चले जायेंगे तो प्रजा में जाकर बिल्कुल ही कम पद पावेंगे। बाकी तो जो मां बाप, दादे का धंधा वह हमारा धंधा। तो अपने बाल बच्चों स्त्री को भी पढ़ाना है। बाबा को फालो करना है। जो पढ़ते हैं बाबा को मदद करते हैं, उन्हीं के लिये यह धन है। वह बाबा अविनाशी धन देता है, और विनाशी धन कोई के बुंदे में बैठ कुर्सी हुंडी के गद्दे में बैठ हुंडी भरावेगा अथवा दिलावेगा। बाबा अविनाशी धन डाइरेक्ट देता है और विनाशी धन इन्डाइरेक्ट दिलाता है। जैसे बाबा अविनाशी धन देता है, जो अविनाशी धन दान करते हैं जाकर शाहूकार राजाओं पास जन्म लेते हैं तो इन डाइरेक्टली विनाशी धन शाहूकारों राजाओं द्वारा दिलाता है। तो यह है रूहानी नालेज। जो मां बाप धंधा करते हैं तो बच्चों का काम है यह धंधा करना। बाप का काम है सुनना और सुनाना। अब बच्चों को पढ़ाने लिये पुरुषार्थ चल रहा है। क्योंकि बच्चे जल्दी पढ़ सकते हैं। बूढ़ों की तो देही लोभ मोह में होने कारण जड़जड़ी भूत अवस्था हो गई है। धारना तो कुछ भी कर सकते हैं क्योंकि ज्ञान बिल्कुल सहज है परन्तु देही अभिमानी न होने कारन देह अभिमान में फंस मोह में फंसने कारन धारना नहीं कर सकते। यह बच्चियां हैं बड़े बड़े P.H.D. पढ़े जैसे को ज्ञान देंगे जो अहंकारी है। तो यह ऐसा छोटे बच्चों बच्चियों का कालेज अथवा युनीवर्सटी निकलना है। छोटे बच्चे कोई ज्ञान में चल जावेंगे परन्तु ज्ञान नहीं तो वर्थ नाट ए पेनी। साधू की आत्मा को जितनी आत्मा होती है। परन्तु उनको कहते बिना सार तो वर्थ नाट ए पेनी है। यह जो नौका गति में आना होता है, जैसे हीरा को हुआ, तो क्या हुआ? फिर भी जन्म मरण में आते और गिरते रहेंगे। जो ऊपर में नये सोल्स आते हैं वह उस समय अपना अच्छा प्रभाव दिखलाते हैं। फिर तो उन्हीं को भी गिरना ही है क्योंकि गोल्डिन सिल्वर कापर आयरन अवस्था में सबको आना ही है। अर्थात् गिरते रहना ही है। ऊपर में आते वह कुछ अपना अच्छा ढंग दिखलाते हैं अर्थात् चलन दिखलाई, बाकी तो गिरना ही है। जब नये सोल्स आते हैं तो उनको कुछ गोल्डिन सिल्वर मज दिखाई पड़ती होगी। यह महीन रचना है जो नये बच्चे हैं वह नहीं जान सकते। विचार सागर मन्थन करने से तुम भी इन राजों को जान सकते। बाकी तो कोटों में कोई समझेंगे साधुओं के नसीब में नहीं है। अब तो जो अभागा है जिनके पास कुछ नहीं है वह आते हैं।

कहते है ना गरीब निवाज अबलाओं को बल देने वाला। इस लिये गरीब बहुत उठाते है। बाकी शाहुकार बहुत कम उठाते है। उन्हों के बुद्धि में आता ही नहीं जो ऐसे समझे स्त्री, स्त्री नहीं, पुत्र पुत्र नहीं। जब बाप की बुद्धि में बैठे तो नौकरी बच्चे को करनी नहीं है, मेरा लौकिक वर्सा इनको मिलना नहीं है, तो यह फिर अबनाशी वर्सा बच्चों को दिलावे ऐसा कौन बाप होगा जो खुद माला माल होवे और चाहेगा कि बच्चे कंगाल बन जावे। तो इतनी दूरंदेश देवा बुद्धि, विशाल बुद्धि चाहिये जो कोटन में कोई। है सारा बाप कृपटर के ऊपर मदार तो बाप को विचार आना चाहिये कि बच्चों को क्या पढ़ाना चाहिये भवष्य में यही पढ़ाई काम आवेगी। वह राज विद्या अब काम में नहीं आवेगी। देखो अष्टावकर ने सब कुछ लेलिया तो जनक की आसक्ति हट जाय। तो आसक्ति होनी चाहिये एक बच्चा में और पढ़ाई में। तो पढ़ कर फिर पढ़ाना है, खुद नहीं सिर्फ बनना है परन्तु औरों को भी बनाना है। ऐसा नहीं कि सन्यासी मुवाफिक बाबा घर बार छुड़ाकर बिठा देगा। बाबा कहेगा बच्चों को भी सिखलाओ। तुम्हारा बच्चा बिनाशी धंधा करता है उनको अबनाशी धंधा सिखाओ। बच्चे को बोलो अगर यह पढ़ाई न पढ़ेंगे तो यह बिनाशी वर्सा भी हम दे नहीं सकते। निकलो घर से बाहर। ऐसा कहने वाला बाप, कोई मुश्किल है। इस मंजिल पर कोई बुला पहुंच सकते। हां बाबा की कशश से कोई बुला निकल आवे तो हो सकता है। यह बहुत महनत की पढ़ाई है जो खुद पढ़ कर फिर औरों का भी कल्याण कर ले। कोई आकर इन्डिविज्युअल पुछे तो उनको बताये सकते कि तुमको ऐसे करना चाहिये। बहुत ऊंची सीढ़ी है, महीन पढ़ाई है, रहना भी घर में परता है जो स्त्री और बच्चों को पढ़ावे। घर में न रहे, स्त्री बच्चो का कल्याण कौन करे। क्योंकि चैरिटी बिगिंस मेट्र होम। तुम्हारी बात अलग है। हम बाप को यहां ले आवे तो फिर स्त्री का हुकम तो घर पर चल नहीं सकता। बाप का फरमान चल सकता है। फरमान चलाने तो स्त्री, स्त्री नहीं, बच्चा, बच्चा नहीं। मां, कृपटर नहीं है तो उनका फरमान चल नहीं सकता।

चेम्बर

बाहर में बहुत है जो घरों घरों को ले आते है, और समझाते है उन्हों को शौक है समझाने का प्लैन्स ऐसे निकल रहे है। जो बहुत सहज समझाये सकते है। दिन प्रति दिन सहज हो रहा है। सारा दिन ऐसा विचार चलता है कि ऐसी कौनसी फुलफुल चीज है जिस से नालेज मिल सके। तो यह है त्रिमूर्ति चित्र सब से अच्छा। तो बाबा को बहुत हाबी है चित्र बनाने की। इस चित्र में ऐसे फर्स्ट किलास नालेज नुधी हुई है जो बात मत पुछो। ख्याल करता कि जो हैंड बैगस हाथ में उठाते है बड़ बनावे। यह भी एक पेडवर्टाईज है जिस में बहुत आवेंगे समझेंगे तो कुछ हास्टिल कालेज बनवाओ। अच्छा चलो। ॐ शान्ति